Dr.Raman kumar thakur
Assistant professor (Guest) Department of Economics, D.B. College Jaynagar, L.N.M.U Darbhanga.

Class -B. A. Part_1 (H)

Date :- 15 April 2020

" गरीबी "
(POVERTY)

* गरीबी अथवा निर्धनता से आशय वैसी स्थिति से है, जिसमें व्यक्ति अपनी तथा अपने पर आश्रित सदस्यों की आवश्यकता की पूर्ति धन के अभाव के कारण नहीं कर पाता है। जिसके कारण उसके परिवार के न्यूनतम आवश्यकता जैसे -रोटी,कपड़ा, मकान भी उपलब्ध नहीं हो पाता । दूसरे शब्दों में "निर्धनता से तात्पर्य उस अवस्था से है । जब समाज का एक वर्ग अपनी जीवन ,स्वास्थ्य ,एवं कार्य - कुशलता के लिए आवश्यक न्यूनतम उपभोग आवश्यकताओं को पूरा करने में अपने को असमर्थ रहता है। * निर्धनता के निम्नलिखित दो धारणाएं हैं

1.) सापेक्ष निर्धनता(Relative poverty)
2.) निरपेक्ष निर्धनता(Absolute Poverty)

* सापेक्ष निर्धनता(Relative poverty) :→ सापेक्षिक निर्धनता से आशय विभिन्न वर्ग के लोगों में प्रदेशों या दूसरे देशों की तुलना में पाई जाने वाली निर्धनता से है जिस देश,राज्य ,वर्ग का जीवन स्तर दूसरे देश, राज्य, तथा वर्ग से नीचे पाया जाता है। वे सापेक्ष रूप से निर्धन माने जाते हैं। दूसरे शब्दों में सापेक्ष निर्धनता आय में पाई जाने वाली असमानता को प्रकट करती है।

* निरपेक्ष निर्धनता(Absolute poverty): → निरपेक्ष निर्धनता से आशय किसी देश की आर्थिक अवस्था को ध्यान में रखते हुए निर्धनता के माप से है ।अधिकतर देशों में प्रति व्यक्ति उपभोग की जाने वाली "कैलोरी" तथा न्यूनतम उपभोग स्तर द्वारा निर्धनता को मापने का प्रयत्न किया गया है भारत में निरपेक्ष निर्धनता का अनुमान लगाने के लिए निर्धनता रेखा (Poverty Line)की धारणा का प्रयोग किया गया है ।मोटे तौर पर निरपेक्ष निर्धनता से तात्पर्य उस न्यूनतम आय से है जिसकी एक परिवार के लिए आधारभूत न्यूनतम आवश्यकता की पूर्ति हेतु आवश्यकता होती है तथा जिसे वह परिवार जुटा पाने में असमर्थ होता है।"

* निरपेक्ष व सापेक्ष निर्धनता में अंतर:→

(1.) निरपेक्ष निर्धनता (Absolute poverty)का तात्पर्य निर्धनता के लिए निर्धारित की गई न्यूनतम आवश्यकताओं से है

(2.) संख्या, इसका अभिप्राय उन लोगों की संख्या से है जो निर्धनता रेखा से नीचे रहते हैं।

(3) माप , इसे दो आधारों पर मापा जा सकता है→अ) कैलोरीज मापदंड तथा (ब) मासिक उपभोग या आय मापदंड।

* सापेक्ष निर्धनता→1) इसका तात्पर्य आय कि असमानता तथा वितरण से है।

2) यह दो राष्ट्रों या समाजों के बीच तुलनात्मक अध्ययन है । यह सापेक्षिक निर्धनता को दर्शाता है।

3) इसे भी दो आधारों पर मापा जा सकता है→अ) तुलना के आधार पर (ब)प्रति व्यक्ति आय के डॉलर मापदंड पर।

" निर्धनता रेखा "
(Poverty Line):→ भारत में अनेक अर्थशास्त्रियों एवं संस्थाओं ने निर्धनता के निर्धारण के लिए अपने-अपने परमाप बनाए हैं इन सभी अध्ययनों के आधार पर 2250 कैलोरी के बराबर खाद का मूल्य है। योजना आयोग द्वारा गठित विशेषज्ञ दल " task force on minimum needs and effective Consumption Demand " की रिपोर्ट के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र में प्रति व्यक्ति 2400 कैलोरी प्रतिदिन तथा शहरी क्षेत्र में प्रति व्यक्ति 2100 कैलोरी प्रतिदिन के हिसाब से जिन्हें प्राप्त नहीं हो पाता, उसे गरीबी रेखा से नीचे माना गया है । निर्धनता रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों की पहचान का मुद्दा भारत में कुछ समय से विवादास्पद बना हुआ है योजना आयोग राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन(NSSO) के सर्वेक्षणों के आधार पर ही निर्धनों की संख्या का आंकलन करता रहा है । उधर प्रो .डी टी.लक लकरावाला की अध्यक्षता में गठित विशेषज्ञ दल ने योजना आयोग के इन आंकड़ों को अविश्वसनीय बताते हुए निर्धनों की पहचान के लिए वैकल्पिक फार्मूले का उपयोग किया ।जिसके तहत प्रत्येक राज्य में मूल्य स्तर के आधार पर अलग-अलग निर्धनता रेखा का निर्धारण किया गया।

* भारत में निर्धनता या गरीबी के कारण :→

भारत में राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय कम होने के कारण ही यहां के लोग निर्धन है ।अतः जो कारण भारत में राष्ट्रीय आय कम होने के लिए उत्तरदायी है ।वही कारण भारत में निर्धनता या गरीबी के लिए भी उत्तरदायी है ।जो इस प्रकार से हैं :→

1) आर्थिक कारण,(Economic Causes)

2) सामाजिक कारण(Social Causes)

* आर्थिक कारण के तहत निम्नलिखित प्रमुख कारण है जो इस प्रकार है:→

(a) कृषि पर अत्यधिक निर्भरता(Excesive Dependence on Agriculture)

(b) औद्योगिकरण का अभाव(Luck of industrialisation)

(c) पूंजी निर्माण की कमी(Luck of Capital formation)

(d) आर्थिक निर्माण संरचना का अभाव(Lack of Economic Infrastructure)

(e) योग्य साहसी का अभाव(Luck of efficient Entrepreneur)

(f) जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि(Rapid increase of population)

(g) राष्ट्रीय आय का असमान वितरण(unequal distribution of national income)

(h) निम्न उत्पादकता(Law productivity)

(i) बेकारी तथा अर्ध-बेकारी(unemployment and semi unemployment)

* सामाजिक कारण(social causes):→
1) लोग जातिवाद धर्म बाद और पुरानी परंपरागत रूढ़ियों में इतने बंधे हुए हैं कि वे नई परिस्थितियों को नहीं अपनाना चाहते हैं इसलिए उनमें गतिशीलता का अभाव है जिससे कई प्रकार के उद्योगों के विकास में बाधा उत्पन्न होती है

2) भारत में जनसाधारण का भाग्य वादी दृष्टिकोण है जो कि देश की आर्थिक प्रगति पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है

3) अहिंसा के अधिक मात्रा में प्रचलन के कारण एक ओर तो मछली ,मांस आदि उद्योगों का विकास नहीं हो सका। और दूसरी ओर कीड़े ,मकोड़े, चूहे ,बंदर आदि से होने वाली हानियों को रोकने की व्यवस्था नहीं की जा सकी।

4) शीघ्र से शीघ्र पुत्रियों का विवाह करना एक धार्मिक कर्तव्य माने जाने के कारण जनसंख्या में अप्रत्याशित रूप में वृद्धि हुई है ।जो आर्थिक विकास के मार्ग में एक कंटक के रूप में आया है ।जाति प्रथा के चक्र में जन्म मृत्यु एवं विवाह में बड़ी मात्रा में मौद्रिक व्यय करना पड़ता है। जिससे लोग ऋण भार से ग्रसित हो जाते हैं। इसके फलस्वरूप बचत विनियोग एवं आर्थिक विकास पर अत्यंत हानिकारक प्रभाव पड़ता है।